Ajab sa Itvaar [Hindi]

Ankita Singh, DM

Assistant Professor, Department of Cardiac Anaesthesia and Critical Care, AIIMS, New Delhi.

Corresponding Author:
Dr Ankita Singh,
Department of Cardiac Anaesthesia and Critical Care,
AIIMS, New Delhi - 110049, India.
Email: ankitasingh299 at gmail dot com

Received: 10-MAY-2025 Accepted: 26-MAY-2025 Published: 14-JUN-2025

कुछ अजब सा इतवार था,
रात भर जागा हुआ,
और सुबह हलके से अंगड़ाई लेते हुए,
Good Morning कहता हुआ. . .

अभी भी महक रहा हरसिंगार था,
गुलमोहर के कुछ पत्ते सलवटों मे
सिकुड़ने से लगे थे,
और कुछ टहनियों को अलविदा कहकर
हमेशा के लिए बिछड़ने से लगे थे I

बालकनी मे खड़े हुए चाय की प्याली में
मैने जैसे ही बिस्कुट को डुबाया,
सुबह exact आठ बजे मुझे
एक Obs and Gynec SR का call आया:

Hello Doctor,
हमारे पास एक patient refer होकर आई है I
26 year old female,
9 months pregnant with active bleeding,
her haemoglobin has dropped to 4g/ dl.
We will have to take her in for emergency surgery.

मैने चाय की प्याली को मेज़ के एक कोने मे खिसकाया,
और तुरंत अपनी Scooty को हवा से भी तेज़ गति से दौड़ाया I

Cite this article as: Singh A. Ajab sa itvaar [Hindi]. RHiME. 2025;12:33-5.

एक एक कदम लांघते हुए मैंने
फ़टाफ़ट बिल्डिंग की सीढ़िया चढ़ी,
और ICU मे घुसते ही मेरी पहली नज़र
bed no. 2 के patient पे पड़ी:

खून की कमी से उसका चेहरा ऐसा हो गया था
जैसे मुरझाया हुआ नर्गिस का फूल हो,
होंठ ऐसे सूखे थे
जैसे पानी को तरसती रेगिस्तान की धूल हो. . .

एक के बाद एक खून की बोतल बदलती जा रही थी,
Bleeding बंद नहीं हो रही थी,
नब्ज़ अब गिरती जा रही थी,
फ़ौरन ही patient ऑपरेशन थिएटर में shift हुई ,
हमने anaesthesia दिया, और surgery शुरू हुई ।

माँ की नाज़ुक हालत का कुछ
बच्चे पर भी असर हो चुका था,
पैदा होने के बाद ना वो हाथ हिलाता,
ना साँस लेता,
ना रो रहा था. . .

भगवान का रचाया ना जाने कौन सा खेल
उस दिन उस मंच पर हो रहा था,
किसी को जन्म देने की चाह में
कोई अपनी ज़िन्दगी खो रहा था ।

ना जाने आज ज़िन्दगी जीतती है,
या मौत हार जाती है. . .

India में maternal mortality rate इतनी high है,
पर कमाल है ना, कि फिर भी,
कोई औरत कभी माँ बनने से नहीं घबराती है ।

ऑपरेशन अब खत्म हो चुका था,
माँ और बच्चा दोनों की सांसे ventilator पर चल रही थी ।
घरवालों को बताया कि हालत अभी भी serious है,
एक एक घड़ी उनके लिए सदियों सी गुज़र रही थी,
24 घंटे तक कुछ भी कहना थोड़ी जल्दबाज़ी होंगी ।

भगवान इतने कठोर तो नहीं,
उनको इस बच्चे से क्या नाराज़गी होंगी?

इतवार बीत गया था, पर गुज़रा नहीं था,
घर आकर रोया ना हो,
दिल का कोई ऐसा टुकड़ा नहीं था।

इस घटना के 10 दिन बाद
मैं फिर उसी building, वही गलियारे, उसी ICU से गुज़री,
और मेरी नज़र इस बार फिर bed no. 2 के patient पर पड़ी:

फिर वही गोल चेहरा, वही बड़ी आखें,
माथे पर सुकून, और जैसे बारिश के बाद आसमां हो,
थोड़ी नम थोड़ी उजली निगाहें।

मुझे देखा, हल्के से मुस्कुराई और बोली:
Madam, आप यहाँ बहुत दिनों बाद नज़र आईं !
आहिस्ता आहिस्ता अपने बगल से कंबल को हटाया
और एक नन्हे फ़रिश्ते को अपनी गोद में उठाया,
फिर एक नज़र उसकी तरफ देखा,
फिर मेरी तरफ, और कहा:
Madam, thank you so much!